पटना और दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी मासिक भारत वार्ता के नारी शक्ति अंत में छपी मेरी कहानी जो इस प्रकार है:-

बाप का नाम

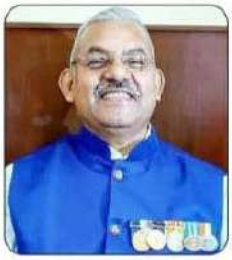

गंगेश्वर सिंह
पूर्व पुलिस महानिदेशक, पश्चिम बंगाल
संप्रति - सदस्य, कर्मचारी चयन आयोग, पश्चिम बंगाल

तब चैत्र का आखिरी पखवाड़ा भी खत्म होने वाला था। शिरीश की छांव कार्यालय भवन को अपनी आगोश में ले लिया था। शिरीश के पीले फूल मानो रुई के महीन धागों से तैयार होते हैं। खुशबू लाजबाब! तेज हवा में झड़ जाते हैं खुशबू बिखरते। इसके दो–चार धागे खिड़की के रास्ते मणिरत्नम् के कमरे में भी प्रवेश पा जाते हैं। इन्हें आने के लिए परमिशन की जरुरत नहीं पड़ती। बेरोकटोक मणिरत्नम् की कुर्सी पर तो कभी बालों से उलझ जाते हैं। उसकी पत्नी अक्सर उसकी इस लापरवाही पर हंसती और बड़े प्यार से बोलती– अपनी शक्ल आइने में देख आईये। अरे भाई सिरीस के फूल ही तो है। मुझसे इनके लगाव तो देखोय किसी प्रेयसी से कम नहीं।

हंसी ठिठोली से घर गुंजायमान हो उठना और हंसी जैसे घर में ठहर सी जाती। अभाव, आदर्श, परिधि, शिष्टाचार जैसे द्विअर्थी शब्दों और उनके दर्शन पर विचार कम होता। शाम अखबारों की हेडलाईन विशेषकर – पी. एस. घेराव, पुलिस रिच लेट देखने में गुजरती। कभी–कभार घूमने–फिरने का शौक भी नशे की तरह सवार हो जाता। शायद ही यह नशा हकीकत बना हो। कोई तूफान आता और शहर से गांव की ओर दौड़ना पड़ता था।

फरियादियों की लम्बी कतार आवास पर पीछा नहीं छोड़ती। आर्डली को यह डांट लगती परन्तु पत्थर मोम बन जाता। कभी रुखाई में इतना अवश्य कह देता– यहां नहीं कार्यालय में आ जाओ। वही सुनूंगा। यह कहकर मणिरत्नम गाड़ी में सवार होता। जनवादी संघ वाले आपसे मिलना चाहते हैं। उनको मेमोरेंडम देना है। आर्डली सहमते हुआ बोला था। भेज दो। नमस्कार! हमलोग जनवादी संघ की ओर से आये हैं। मैं आपको सब सदस्यों से परिचय करा दूं। हां, हां जरुर।

मैं अखिल रंजन मिश्रा सचिव, अविनाश कोषाध्यक्ष,

परिचय का दौर समाप्त होने पर सचिव महोदय– दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद बन्द करना होगा। बहुत हुआ ऐसा नहीं चलने दिया जायेगा, मणिरत्नम भौंचक्का रह गया था। खैर किसी तरह से उनसे निपटा और उनको जाने को बोला।

फाइलों के घेरे से ढंके मुंह ऊपर कर चाय की पहली चुस्की लेते ही फोन खनखना उठा– मणिरत्नम हियर, स्पीकिंग और अराजकता कितने दिनों तक बर्दाश्त करेगें, हरेक चीज की हद होती है। हमलोगों को रास्ते पर उतरना होगा। कानून को हाथ में लेना होगा। किसने रोका है? आप हमारे कहने पर क्यों रास्ते पर उतरेगें? फैसला आपके हाथ हैं। पुलिस अपना काम करेगी। उधर से जवाब की प्रतीक्षा न कर मणिरत्नम रिसीवर को पटक दिया। सर, आपसे एक महिला मिलना चाह रही है। दूर के एक गांव से आई है। बहुत जरुरी काम से आई है। आर्डली अपनी बात पूरी भी नहीं सका था कि मणिरत्नम का सर आगे की ओर झुक गया। आर्डली के लिए यह संकेत आदेश से कम न था।

मणिरत्नम दरवाजे की तरफ सर मोड़ा ही था कि महिला हाजिर हो गयी– सर, हमको बचाईये मैं दर–दर की ठोकरे खा चुकी हूं। एक ने मेरे तन से खेला और सारी दुनिया मेरी इज्जत और आबरु से खेल रही है। मैं बहुत आशा लेकर आपके पास आई हूं। बहुत नाम सुना है सबों से। आपको छोड़कर

मेरा उद्धार करने वाला यहां कोई नहीं, पहले अपनी समस्या तो बताएं। महिला की आंखें डबडबा गईं थीं। तन थरथर कांप रहा था। साड़ी के पल्लू से गाल पर अनवरत लुढ़कते आंसुओं पर नियंत्रण में वह असफल रही। हृदय की गहन पीड़ा मानों उसके अभिव्यक्ति के द्वार को जर्जर कर दिया हो। मन में उठे भाव स्वर द्वार तक आते ही वापस जर्जर हृदय में कहीं खो जाते थे। यह क्रम चलता रहा।

इसके बावजूद मणिरत्नम उसके आंसूओं पर नहीं आया। उसे अभी भी लग रहा था महिला उसे आंसूओं के भंवर जाल में फंसाकर अपना उल्लू सीधा करना चाह रही थी। संदेह उसे विरासत में ही मिला था। आखिरकार महिला के आंसू थे, मणिरत्नम अपने संशय के घेरे से बाहर आ गया। अब वह सत्यान्वेषण के दौर से गुजर जाना चाहता था। आपका नाम एवं ठिकाना? मेघना शाहा पर्वतपुर फकीरपुर थाना। समस्या?

मैं सतायी हुई औरत हूं मेरी समस्या यहीं है, यदि इसका निदान हो जाय तो कीजिए। मेरा इस संसार में कोई नहीं है। मैं शरणागत हूं। देखिए पहेली न बुझाइये। बात को स्पष्ट तरीके से कहिए। मणिरत्नम का रुख कड़ा था।

मेघना सहम गयी थी। वह जिन्दा लाश की

तरह लगने लगी थी। आंसूओं की लड़िया फिर झरने लगी थी। मणिरत्नम का संदेह सच निकला। मेघना बोली– पापी ने मेरे साथ अन्याय किया। एक रेप का केस भी कोर्ट में सुनवाई के लिए पड़ा है। रेप केस में क्या हुआ है? रिपोर्ट कोर्ट में चली गयी है या नहीं? चार्जशीट हो गयी है। पापी मामले की सुनवाई में बाधा डालता है। मैं पिछले पांच वर्षों से मुकदमा लड़ रही हूं। अबला किस–किस से अकेली लड़े? अगर चार्जशीट कोर्ट में चली गयी है तो पुलिस का और क्या एक्शन बाकी रहा है? एक पुलिस आफिसर के टिपीकल जवाब ने मेघना के मर्मस्थली को आहत कर दिया था।

वह चिल्ला उठी– तब आप भी कुछ नहीं कर सकते। मेरे लिए आत्महत्या के सिवा और पथ नहीं। आत्महत्या? नहीं नहीं मेरी संतान का क्या होगा? मैं अकेली लडूंगी इस लड़ाई को मैं पति की तलाश में नहीं हूं। मुझे मेरे बच्चे के लिए एक बाप का नाम चाहिए नाम के साथ पिता का नाम भी लगता है। अगर ऐसा नहीं होता तो मैं आखिरी दम तक इन्तजार कर सकती थी। आप अगर जवाब दे रहे है तो मैं उठती हूं। यह कहकर महिला कुर्सी से उठ खड़ी हुई। मणिरत्नम को उसके ऊपर दया आ गयी। वह उसे बैठने को कहा। सारी बातों की जानकारी हो जाने पर मणिरत्नम ने उसे अगले हफ्ते आने को कहा। महिला आश्वासन पाकर पुलकित हो गयी थी। उसे लगा था शायद उसका काम होने को आया। कार्यालय में अकेला बैठा मणिरत्नम न जाने कौन से ख्याल में खो गया।

क्या सचमुच यह एकतरफा भूल है। नहीं? दोनों ही दोषी है। शायद उस समय दोनों ही खुश रहे होगें। अब एक पक्ष क्यों दूसरे पक्ष को कोस रहा है या अपनी गलती को दूसरे के माथे मढ़ रहा है। क्या सृष्टि ऐसे भी नहीं चल सकती थी? सब रस्म–रीवाज फिजूल लगने लगे थे। सिर्फ एक बाप के नाम के बिना बच्चे का जीवन शाप बनकर रह जायेगा। शायद स्कूल में दाखिला के समय से ही यह समस्या सामने आ जायेगी। बच्चा स्कूल में पढ़ता है। जवान होने के बाद मालिकाना हक के समय में भी तो नाम के साथ बाप का नाम आता है। एक के बिना दूसरा कितना अधूरा होता है।

इंसान का अन्तःकरण जब सत्य को सत्य मान लेता है और वह ठान लेता है उसे कुछ करना है तो सारी मुसीबतें दूर हो जाती हैं। वह अपने बुद्धि और विवेक के द्वारा चलायमान होने लगता है– एक सत् उद्देश्य की ओर अकेला। मणिरत्नम उसी ओर चल रहा था जिस दिशा की उसे तलाश थी। एकाएक वह थम गया। हां, इसी गांव में मेघना शाहा रहती थी।

गांव के बुजुर्ग वहां जमा हो गये थे। मणिरत्नम ने सबों को ललकारा था– यह गांव के लिए शर्म की बात है। एक मेघना तक ही बात शेष नहीं होती और भी मेघना इस गांव में बनेगी। एक बदमाश आदमी को आपलोग ठीक नहीं कर सके। पिछले पांच वर्षो तक बेचारी दर–दर की ठोकरें खाती रही। मेघना के मां–बाप जो नहीं हैं।

ग्रामीण जन समुदाय को ललकारते हुए मणिरत्नम पुनः बोला– मेघना का केस गांव के लिए एक लज्जाजनक घटना है जिसका समाधान होना चाहिए था। अब तक यह नहीं हुआ यह और भी लज्जाजनक है। इसकी गारंटी कौन दे सकता है कि इस मेघना के बाद और मेघना इस गांव की जमीन पर न बने। एक साधारण सा मामला है जिसका समाधान पिछले पांच वर्षों तक नहीं किया गया। हमें संदेह होने लगा है कि इस गांव में सभ्य लोग भी रहते हैं। असंभव नहीं कुछ लोग– बदमाश कण्डारी (बलात्कारी) से मिलकर मेघना के विरुद्ध षडयंत्र रच रहे हैं। मैं ऐसे लोगों को नंगा नाच नचा दूंगा– मेरा नाम मणिरत्नम है। मैं सबों से अनुरोध करता हूं, मेघना केस को लेकर गांव में सभा हो और फैसला की एक कापी हम तक एक सप्ताह में पहुंच जाय। न्याय निरीह और अबला के लिए अचल सम्पति है। हम एक सभ्य समाज का निर्माण करेंगे। इसमें सबका हित है। और हां, सामाजिक न्याय का पहला व्यक्ति मेघना, पहला गांव पर्वतपुर एवं पहला थाना फकीरपुर होगा। तालियों की गड़गड़ाहट एवं जयजयकार के बीच मणिरत्नम की गाड़ी आगे बढ़ी।

मणिरत्नम यह देखकर हतप्रभ रह गया बदमाश आफिस में आकर गिड़गिड़ा रहा है। यह दूसरे दिन की ही घटना है। वह गुहार लगा रहा था– अबकि बार उसे बचा लिया जाय। जीवन में इस तरह की भूल दुबारा न करेगा। मेघना के नाम वह एक मोटी रकम बैंक में जमा कर देगा परन्तु वह उससे शादी नहीं करेगा। वह मेघना के पुत्र को अपना पुत्र भी नहीं मानेगा। मणिरत्नम सब सुन चुका परन्तु उसने अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न की। मेघना के साथ गांव के और लोग भी मणिरत्नम के दरवाजे तक आ गये थे। उसने सबों को कार्यालय कक्ष के अन्दर आने का आदेश दिया।

साहब इसी लगन में इसकी शादी होनी तय है। इसकी मंगनी भी हो चुकी है। अगर जल्दीबाजी में कुछ नहीं किया गया तो मेघना को सब तरफ से हाथ धोना पड़ जायेगा। यह काफी धोखेबाज आदमी है। इसकी बात का भरोसा नहीं। एक गणमान्य सज्जन बोलकर वापस सांस भी नहीं ले पाये थे कि कण्डारी बोल उठा– आपने तो उस समय हमसे पैसे ऐंठें और आज मेघना की तरफदारी करते लज्जा नहीं आयी। अच्छा खाना खिलाया और आपकी बेटी की शादी भी मैंने ठीक करायी। आज आप गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं।

मणिरत्नम सकते में आ गया। वह किसकी ओर बोलेय ठीक नहीं कर पा रहा था। तपाक से बोल उठा– किसने किसको पैसे दिये? कब? क्यों? और कितना? यह मुख्य मुद्दा नहीं हैं कण्डारी। यहां फैसला करना है कि तुम इस अबला को पत्नी मानते हो या नहीं? कण्डारी बोल उठा– सर अगर मुझे मोटी रकम मेघना को देना ही होगा तो पत्नी के रुप में इसका वरण नहीं करूंगा। मेघना से उत्पन्न संतान को अपनी संतान भी नहीं मानूंगा। इतना ही नहीं, अदालत में चल रहे केस भी वापिस लेना होगा। मणिरत्नम को कड़ा रुख अख्तियार करना पड़ा। वह पुलिसिया अंदाज में कण्डारी पर बरस पड़ा– यह तुम्हारा बाप का घर है, तुम्हारी जमीन्दारी है, मन में जो आया बके जा रहे हो। इतने सारे लोग बेवकूफ है। तुम्हीं सबसे ज्यादा बुद्धिमान हो।

कण्डारी का चढ़ता तेवर नरम पड़ गया था। सर्वसम्मति से अगले सप्ताह तक मामले को स्थगित रखा गया। गरमी बेताहाशा बढ़ गयी थी। बिजली की आपूर्ति

में काफी अनियमितता चल रही थी। गरमी के साथ शहरी इलाके में मच्छर भी काफी बढ़ जाते है। मणिरत्नम परेशान था। घर में अक्सर पत्नी ताने कसती रहती। वह बहुत कुछ अनसुनी कर देता। अक्सर मणिरत्नम शाम को दौरे पर जाता था। गरमजोशी इतनी कि वह कोई भी काम असंभव नहीं मानता। अपनी शक्ति को जरुरत से ज्यादा करके आंका करता था।

कुछ दिनों बाद यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी कि कण्डारी गांव से लापता हो गया। वह पास वाले शहर अकबरपुर में एक धनवान परिवार की लड़की से शादी रचाने वाला है। अन्य विश्वस्त सूत्रों ने भी अफवाह को सच बना दिया। आनन–फानन में मणिरत्नम ने अकबरपुर के पुलिस अधिकारी से सम्पर्क साधा और शादी की बात बतायी। उधर से जवाब आया– इसमें हर्ज क्या है? कोई आदमी अपनी मर्जी से जहां और जिससे चाहे शादी कर सकता है। शादी क्यों रोकी जाय? मणिरत्नम फोन पर ही गरमाते हुए जवाब दिया– यह आजादी सबके लिए है। लेकिन प्रेम का झांसा देकर सन्तानोत्पति कर फिर नये शिकार की तलाश करना आजादी के दायरे से बाहर है। मैं इस आजादी पर अंकुश लगाना चाहता हूऊ। मणिरत्नम परास्त हुआ था परन्तु पस्त नहीं। उसने प्रस्तावित शादी के कन्या पक्ष वालों को इत्तला दिया– वर योग्य नहीं है। आपकी बेटी आपका भार बने, आजीवन रोती रहे और आप लाचार देखते रहे– मैं नहीं चाहता। आप तो और भी न चाहे क्योंकी बेटी आपकी है। चौकियेगा मत– वर रेप केश का आरोपी है और कभी भी फांसी के फंदे पर झूल जायेगा। अब फैसला आपके हाथ है। मणिरत्नम प्रस्तावित शादी को रद्द करने में कामयाब हुआ। अब मणिरत्नम के सामने प्रश्न था– मेघना को पति चाहिए– अविवाहित कण्डारी?मेघना के पुत्र को पिता का नाम चाहिए वहीं नाम जो वह चाहती है। कण्डारी को मनाना होगा, डराना होगा और यह सब काम करवाना होगा। मणिरत्नम इसी कशमकश में था। सामने कोई स्पष्ट रास्ता नहीं दिख रहा था। मामला नाजुक था। थोड़ी सी भूल घातक साबित हो सकती थी। कानून के सारे रास्ते बन्द थे। लड़का स्कूल जाने लायक हो चला था। कण्डारी की माली हालत अच्छी थी। कोई भी अपनी बेटी उसे देने को तैयार था। कण्डारी की अगर शादी हो जाती तो फिर सब परिश्रम निरर्थक हो जाता।

रात ग्यारह बजे थे। मणिरत्नम दो अंगरक्षकों के साथ चल पड़ा। वातावरण में व्याप्त भीनी–भीनी खुशबू ने मन को तरोताजा कर दिया था। सोने की सुधबुध नहीं रही। कहां जाना था– यह भी याद न रहा। ऐसा लग रहा था मानो यह सन्नाटा ब्रह्माण्ड में सदियों से विराज रहा हो। इसका ओर–छोर जैसे हो ही नहीं। सांस पर भरोसा था जिसने दूसरे पल अस्तित्व का एहसास दिलाया।

ड्राइवर के पूछने पर मणिरत्नम ने सिर्फ दिशा बतायी और रत्नम रहने का आदेश दिया। दूसरे मोड़ पर वट वृक्ष देखते ही मणिरत्नम गाड़ी रोकने को बोला। सामने वाले घर के सामने खड़ा हो वह दरवाजा खटखटाया– कण्डारी ने दरवाजा खोला। मणिरत्नम ने उसे धर दबोंचा। शायद कण्डारी यह कल्पना भी नहीं किया हो। मणिरत्नम ने उसे गाड़ी में उठाया और चल पड़ा पहाड़पुर थाने की दिशा में। सुनसान जगह में गाड़ी रोक मणिरत्नम ने कण्डारी को नीचे उतारा और पूछताछ शुरु की। मेघना के साथ तुम्हारा शारीरिक सम्पर्क एक समय था?

हां बाबू। बच्चा तुम्हारा है?

बोलना मुश्किल है। क्या बोला रे साला, भूल बाबू, बच्चा मेरा ही है। शादी का प्रलोभन देकर सब हुआ। वह भिन्न जाति की है इसलिए शादी न हो सकी।

तुम्हें अपने किये पर पछतावा नहीं? हां बाबू, लेकिन हम शादी नहीं कर सकते उससे, बच्चा को भी बेटा नहीं मान सकते। वही तो साला तुम्हें करना होगा जो तुम नहीं चाहते। समझा। कण्डारी कड़क कर बोल उठा– पुलिस को कानून के दायरे में रहकर काम करना पड़ता है। मामला अदालत में है। अदालत का फैसला मुझे मान्य होगा। मैं पुलिस को नहीं मानता। मणिरत्नम ने रस्सी के सहारे सड़क के किनारे वाले पेड़ से उसे बांध दिया और बोला– पुलिस को मानने न मानने का सवाल नहीं है। एक बच्चे का भविष्य है और एक अबला की इज्जत का भी सवाल है। अदालत में फैसला होते दस साल और लगेगें। तब तक बच्चा जवान होकर तुम्हारा कत्ल कर देगा। मेघना वेश्यालय में चली जाय। तुम यह चाहते हो? कण्डारी बोल उठा– मैं उसे कुछ जमीन दे दूंगा। उससे ज्यादा कुछ नहीं? मणिरत्नम चुप रहा। कुछ दूरी पर ले जाकर उसे पास वाले तलाब में डूबकी लगाने को कहा। कण्डारी ज्योही तलाब में डूबकी लगाकर सर बाहर किया। एक धमाकेदार आवाज हुई। गोली मणिरत्नम के रिवाल्वर से निकली थी। दूसरी गोली, तीसरी गोली चली ही थी कि कण्डारी चिल्ला उठा– पुलिस मेरा माई–बाप है। आपकी बात मैं मान लूंगा। स्वस्थ्य समाज की परिकल्पना का मैं भागीदार हूं। समाज को मैंने दूषित किया है। मेघना के साथ मैंने छलावा किया है। मैं उसे पत्नी के रुप में स्वीकार करूंगा। पुत्र के रुप में उससे जन्मी सन्तान को अपनाऊंगा। आज मेरा मन का मैल मिट गया। मैं पापी हूं, अधम हूं, मुझे जीने का हक नहीं है। कण्डारी को लेकर गाड़ी पहाड़पुर थाने पहुंच चुकी थी। मणिरत्नम मूर्तिवत गाड़ी में बैठा रहा। निर्देशानुसार मेघना को उसके गांव वालों के साथ पहाड़पुर थाने में बुलाया गया। पासवाली दूकान से सिन्दूर और मिठाई लायी गयी। दारोगा बाबू बड़े खुश दिख रहे थे। एक मण्डप सजाया गया थाना प्रांगन में ही। लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। वैदिक मंत्रोचार के बिना शादी हो रही थी। कण्डारी बड़े चाव से मेघना की मांग में सिन्दूर भर रहा था। पंचों के सामने कण्डारी ने लिखित रुप से मेघना के नाम पांच बीघा जमीन, पचास हजार रुपया एवं अपनी संतान का बाप होना स्वीकार किया। सब गद्गद थे। दारोगा जी बोल उठे– अदभूत साहेब। मणिरत्नम भाव विभोर हो रहा था ।पूरब दिशा में सूरज अपनी लाली बिखेर रहा था। वातावरण सिन्दूरी हो चला था। रात आधी रात, भोर और सबकी परिणति सुबह में हो गयी थी ।

(कथानक, पात्र, घटना, स्थान और परिस्थिति– सब काल्पनिक हैं।)